प्रातः क्लास 4-10-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बच्चे शान्ति में बैठ क्या सोच रहे हैं। यह तो बाप ने समझाया है कि जोकुछ भी इन आंखों से देखते हो, देखते हुये, कर्म करते हुये, यह कर्म है ना। बच्चे बाप को देखते, बाप बच्चों को देखते हैं, देखते हुये नहीं देखते हो। क्योंकि तुम अपन को आत्मा समझते हो। आत्मा को ही देखते हो न कि शरीरों को। आत्मा समझती है अभी यहां से जाना है। शान्तिधाम से होकर फिर सुखधाम में जाना है। इन आंखों से जो कुछ तुम देखते हो यह सभीपुरानी तमोप्रधान चीज़ें हैं। आत्मा को तो इन आंखों से देखा नहीं जाता। बाकी जो कुछ देखने में आता हैवह सभी विनाश हो जाना है। जैसे पुराने घर में रहते हैं और नया घर बनाने शुरू करते हैं तो बुधि में चलते फिरते, खाते-पीते यह याद रहता है कि हम अभी जल्दी ही नये मकान में जावेंगे। नया मकान तैयार होने बाकी 5-6 मास है। जिस दिन से बनना शुरू होताहै तो बुधि उस तरफ चली जाती है। अभीनयामकान में जाना है। जो बाबा बना रहे हैं। यह पुराना मकान खत्म हो जाना है। यह है बेहद की ख्यालात। यहभी कहते हैं हम नई दुनिया मे जाकरबैठेंगे। शिव बाबा कहते हैं मैं नहीं बैठूंगा। तो यहां बैठे हुये भी बुधि वहां लगी रहती है। इस शरीर को देखते हुये जैसे कि नहीं देखते हो। बच्चे जानते हैं यह पुरानी दुनिया है। अपने शरीर सहित यह सभी खलास हो जानी है। बाप भी कहते हैं यह शरीर लोन पर लिया हुआ है। यह भी चले जावेंगे। हम भी चले जावेंगेशान्तिधाम। तो बच्चे भी चले जावेंगे शान्तिधाम। इसलिये बाप कहते हैं शान्तिधाम को याद करो। बाप को याद करो। बाप ही पतित-पावनहै, पावन बनाकर पावन दुनिया में ले जाने वाले है। श्रीमत देते हैं ना। भल यहां बैठे हैं तो भी बुधि में बाप और नई दुनिया याद है। जैसे बच्चे कहां भी होंगे, बुधि में यही याद होगाऔरों को भी यह सुनावें। हमारा बाबा नया घर बना रहा है। तुमको भी जो मिलता है उनको यही सुनाते हो बाबानई सृष्टि स्थापन कर रहे हैं। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा श्रीमत देते हैं नई सृष्टि स्थापन करने की। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो यह बन जावेंगे। बच्चे जानते हैं बरोबर यह नई सृष्टि के मालिक थे। सर्वगुण सम्पन्न 16कला सम्पूर्ण ..... यह महिमा इन्हों की गाई जाती है। तुम बच्चों को भी ऐसा बनना है। याद करते2 एक तो पावन सतोप्रधान बनेंगे। सतोप्रधान के गुण यह हैं। सर्व गुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण सम्पूर्ण ... यह तो समझते हो ना। भल तुम यहां बैठे हो बाबा तरफ देखते हो परन्तु यह शरीर याद नहीं रहता। भल तुम समझते हो यह परमात्मा का रथ है। आत्माओं का रथ तो सभीहै। परन्तु इसमें बापआकर दियूशन देते हैं बच्चों को। बहुत ही सहज बात बाप समझाते हैं। समझानी तो बड़ी सीधी मिलती है। भल इन आंखों से देखते हो परन्तु आत्मा को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला हुआहै। तुम बच्चे त्रिनेत्री हो। ज्ञान के तीसरे नेत्र से सृष्टि के आदि मध्य अन्त को जानते हो। यह तीसरा नेत्र सिवाय बापके और कोई दे न सके। बाकी तो यह सभी बाहर के नेत्रहैं। भल कितने भीबड़े2 सन्यासी पंडित आदि हैं परन्तु तीसरा नेत्र की ताकत कोई में भी नहीं है। यह तीसरा नेत्र देने लियेज्ञान सूर्य बाप को आना पड़ता है। यह बहुत सहज बातें समझने की और समझाने की है। यहां तो तुम शान्ति में बैठ कर समझते हो। प्रदर्शनी अथवा म्युजियमेंशान्ति थोड़ेही रहती है। वहां तो बहुत ही आवाज हो जाता है। उनको स्कूल नहीं कहा जाता। वह जैसे मेला हो जाता है। तुम समझाते हो तब जबकि वह सेन्टर में कोर्स करने टाईम देते हैं। मेले में इतना समझते नहीं हैं। इसलिये तुम कहते हो एकान्त में आकर के समझना। पढ़ाई की स्कूल भी हमेशा शहर से बाहर होते हैं। तुम बच्चों को सा० भी किया हुआ हैवहां भी स्कूल दूर2 होते हैं। हेलीकोप्टर में जाना पड़ता है। बच्चों ने शुरू में बहुत2 सा० किये हैं। फिर जो पिछाड़ी में भी रहेंगे वह सा० करेंगे। वहां की भाषा आदि क्या होती है बतलाते थे। क्योंकि यथा राजारानी तथा भाषा चेंज होती जाती है। तो बच्चों को मुख्य बात तो यह समझनी है बाप को तो जरूर याद करना ही पड़े। बाप कहते हैं बच्चे अभी तुम्हारे लिये नई दुनिया बन रही है। तुम जानते होनई दुनिया में कोई भी पतित वा आसुरी अवगुण होते ही नहीं। वह हैसर्वगुण सम्पन्न .. यहां है—

अवगुण। वह (देवतायें) हैं गुणवान। निर्गुण माना कोई गुण नहीं। मैं निर्गुणहारे मैं कोई गुण नहीं। ... निर्गुण बालक की संस्था भी है। वास्तव में बालक को तो निर्गुण कह न सकें। वह तो और ही महात्मा है कोई भी ऐसा नहीं जो उन्हों को समझावे कि यह उल्टा नाम क्यों रखा है। जो बच्चे समझें कि हमारे में गुण नहीं है। समझाने वाला कोई है नहीं। तुम जानते हो हम सभी निर्गुण बालक थे। अर्थात हमारे में कोई नहीं था। मंदिर में देवताओं के आगे भी जाकर गाते थे हम पापात्मा हैं, कामी क्रोधी लोभी हैं। आप सर्वगुण सम्पन्न ... हैं। हम निर्गुण है। बच्चों में तो कोई विकार होते ही नहीं हैं। बड़े होने से फिर बुरे का संग लगता है तो कैरेक्टर्स बिगड़ती जाती है। अवगुण आते जाते हैं। शुरू में ही कैरेक्टर्स खराब हो जाते हैं खराब कैरेक्टर्स वाले अच्छे कैरेक्टर्स वालों के आगे माथा टेकते हैं। क्योंकि वह पावन है। खुद पतित हैं। पवित्र और अपवित्रता में कितना फर्क है। पवित्रता की निशानी भी है। डबल सिरताज। वहां कोई ऐसे लाईट का ताज होता ही नहीं। देखने में नहीं आता है। यह तो समझने की बात है। लाईट को प्युरिटी कहा जाता है। ताज देखकर समझा जाता है यह प्युरिटी में है। इम्प्युरिटी वालों को भी ताज है परन्तु कलियुग में। वह प्युरिटी वाले होते हैं सतयुग में। इम्प्युरिटी का ताज द्वापर से शुरू होता है। फर्स्ट है प्युरिटी। इसलिये बुलाते भी हैं पतित पावन आओ। आकर पावन बनाओ। समझते तो हैं ना कि हम पतित हैं। तो पतित फिर रामराज्य कैसे स्थापन करेंगे। गांधी भी तो गाता था ना पतित-पावन सीता राम ... तो इसको कहा जाता है मिस अन्डर स्टैन्ड। कुछ भी समझते नहीं। मिस अन्डर स्टैन्ड कितने समय तक चलती है। रावण राज्य में जो भी हैं वह समझते हैं यह अनादि चला आ रहा है। बाप आकर सभी की मिस अन्डर स्टैन्ड दूर करते हैं। अभी तुम बच्चे अपने मिस अन्डर स्टैन्ड कहां से आई? शास्त्रों से। जो शास्त्र आदि पढ़ते हैं वही मिस अन्डर स्टैन्ड की बातें सुनाते हैं। सर्वव्यापी कहना, और फिर मुख से बोलते हैं कच्छ अवतार मच्छ अवतार, पत्थर ठिक्कर सब में परमात्मा है। कितनी मिस अन्डर स्टैन्ड है! गीता का भगवान श्रीकृष्ण है। कितनी मिस अन्डर स्टैन्ड है। भक्ति मार्ग ही मिस अन्डर स्टैन्ड। जो कुछ सुनाते हैं रांग ही रांग। राईट तो एक को ही कहा जाता है। वही राईटस वर्थ हैं। रावण द्वारा अनराईटियस बन जाते हैं। तुम अभी समझते हो द्वापर से लेकर बेसमझ बन पड़े हैं। अगर कोई पूरी रीति नहीं समझते हैं तो समझा जाता है देरी से आया हुआ है। फिर देरी से ही आवेंगे। बाप जो समझाते हैं सभी एक रस नहीं समझते हैं। तुम शुरू से ही पार्ट बजाने आये हो। फिर तुमको ही पहले पार्ट बजाना है। पीछे आने वाले जो धर्म हैं वह सभी पीछे ही आवेंगे। इन बातों को मीठे2 बच्चों नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हो तुम जानते हो। यह है बेहद की पढ़ाई जो सिवाय बेहद के बाप के कोई समझा न सके। बाप समझाते भी कितना युक्ति से हैं। जो नम्बरवन पुण्यात्मा अर्थात पवित्र आत्मा था वही अभी बिल्कुल अपवित्र आत्मा बना है। बाप सिध कर बताते हैं मैं इन में प्रवेश क्यों करता हूं। क्योंकि इनको ही फिर फिर नम्बरवन में जाना है। फिर तुम नम्बरवार आवेंगे। जितना जो अच्छा पुरुषार्थ करेंगे। जब घर के नजदीक आवेंगे तो खुशी होगी। स्वर्ग के महल देखने में आते रहेंगे। तुम समझ जावेंगे किसने कितना पुरुषार्थ किया। यहां ही मालूम पड़ जाना चाहिए। भल पढ़ाई भविष्य के लिये है परन्तु पिछाड़ी में बहुतों को सा० होगा। फिर पछताना पड़ेगा। परन्तु पछताने से पास थोड़ेही हो जावेंगे। पछतावेंगे कि हमने अच्छी रीत पढ़ा नहीं। यह बहुत ही ऊंच पढ़ाई है। इसमें पूरा अटेन्शन देना चाहिए। फालतू बातों में कोई फायदा नहीं होता। यह सारी नालेज तो तुम यहां बैठ पढ़ते हो। यह रथ तो उनका है ना। दोनो इकट्ठे बैठे हैं। यह भी समझते हैं हमारे में शिव बाबा की प्रवेशता है। वह इस तख्त पर बैठे हैं। इसमें और कोई विचार तो नहीं आता है ना। ऊपर से बैठ कैसे पढ़ावेंगे। पढ़ाने लिये मुख तो चाहिए ना नहीं तो मुख से जो अमृतधारा लेते हैं वह क्या है? गायन भी है अमृत छोड़ विष काहे को खाये। तुम अमृत पीने से देवता बनते हो। विष छुड़ाई जाती है। बाप कहते हैं यह है पढ़ाई। अमृत कोई पीने की चीज नहीं है। इस पढ़ाई की महिमा की जाती है। अमृत पीने लिये मनुष्य कितना दूर2 तक जाते हैं। समझते कुछ भी —

नहीं हैं। तो इससे सिध होता है बाप जरूर कोई में प्रवेश कर समझाते हैं। मुख रूपी आरगन्स बिगर बोलेंगे कैसे बाप क्लीयर कर समझाते हैं। बाप का यह रथ ही मुकर्रर है। हर 5000 वर्ष बाद इनमें प्रवेश कर तुमको पढ़ाते हैं। हरेक आत्मा का अपना2 रथ अथवा तख्त है। इनको अकाल तख्त कहते हैं। अकाल माना जिसको काल खा न सके। उनका यह चैतन्य तख्त है। आत्मा को काल खा नहीं सकता। वहां तो एक तख्त बना रखा है जिसका नाम रख दिया है अकाल तख्त। अकाल भोंगा भी कहते हैं। और फिर वह अपना नाम रख देते हैं अकाली। वास्तव में अकाल तो है ही आत्मा। जिसको काल कभी नहीं खाता। वह अपने को अकाली कहते हैं। अकाल तो सभी आत्मायें हैं। अक्षर तो बड़ा ही अच्छा है। परन्तु अर्थ भी समझना है ना। बाप बच्चों को थोड़ी2 बात बैठ समझाते हैं। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों खबरदार रहो। तुम्हारा बुधि योग सदैव अपने स्वीटहोम से लगा रहे। स्वीटेस्ट होम है ना। स्वीटेस्ट बादशाही भी है। यह भी तुम जानते हो हम कल्प2 आते हैं। बाबा पास क्यों आते हैं। वरसा लेने। क्योंकि सुना हुआ है ना। सत्य ना0 की कथा सुनते हैं। उनमें बहुतकुछ लिखा हुआ है। अभी तुम क्या कर रहे हो। खेवैया डूबे हुये को पार करते हैं ना। यह भी गायन है भक्ति मार्ग का। जिसका अर्थ बाप आकर समझाते हैं। शान्तिधाम और सुखधाम को बिल्कुल ही भूल गये हैं। क्योंकि शास्त्रों में बहुत गपोड़े हैं। तुम आसुरी मत पर चल शान्तिधाम सुखधाम को बिल्कुल ही भूल गये हो। कहते भी हैं भगवानुवाच मैं तुमको राजयोग सिखाता हूं। और फिर उनके लिये ही कहते हैं कि फलानी को भगाया यह किया। मक्खन चुराया। कितनी वाहयात बातें लिख दी हैं। संगम युग पर ही बाप आकर समझाते हैं यह तुम2 क्या2 कहते रहते हो। आठवां गर्भ फिर कहां से आया। वह तो फिर भी ठीक नम्बरवार गर्भ हुये। यहां तो 6-6 गर्भ में इकट्ठे ही बच्चे पैदा हो जाते हैं। अखबार में समाचार पड़ा था चार बच्चियां दो बच्चे 6बच्चे इकट्ठे होपैदा हुये। तो कुर्तरी हुई ना। बाप समझाते हैं सतयुग में तो कायदा है एक बच्चा एक बच्ची। वह भी योगबल से होते हैं। वहां रावण है नहीं। क्रिमनल आई होती ही नहीं। रावण के आने से ही क्रिमनल आई शुरू होती है। भाई बहन समझने से भी क्रिमनल आई जाती नहीं। काम महाशत्रु है ना। अभी तुम समझते हो हमारे राज्य में (स्वर्ग में) यह कुछ भी नहीं था। बिल्कुल पवित्र थे। वहां तो आयु भी बड़ी होती है। 150 वर्ष की आयु होती है। क्योंकि इस समय योग कमाया है तो वह वरसा पा लिया। तो बाप फिर भी कहते हैं बुधि में यह याद रखो हम आत्मा हैं। अभी = वापिस अपने घर जाना है। यह 5000 वर्ष का चक्र है। बीच में कोई को भी वापिस नहीं जाना है। न कोई मोक्ष को पाते हैं। यह तो बना बनाया ड्रामा का चक्र है ना। उनसे कोई भी निकल नहीं सकते। वह सन्यासी ब्रह्मज्ञानी। तत्वज्ञानी। तत्व अर्थ ब्रह्म= को ही ईश्वर कहते हैं। कितने मिस अन्डर स्टैन्ड है। एक मिस अन्डर स्टैन्ड के कारण वह कब भी पूण्यात्मा बन नहीं सकते। ब्रह्मा को याद करते हैं परन्तु ब्रह्म= तो हम आत्माओं का घर है। घर को याद करने से पाप थोड़ेही कट सकते। न तो सतोप्रधान ही बन सकते हैं जो फिर वापिस जाये। नहीं। यह हैडिटैल की बातें। बाकी वह तो है ही सैकण्ड की बात। बाप को याद करो तो बाप का वरसा है ही। बाप ही स्वर्ग नई दुनिया रचते हैं। क्रियेटर तो चाहिए ना। नई दुनिया क्रियेट करते हैं। वह तो स्वर्ग ही है। अभी तुम जानते हो हम ही थे। फिर अब बनते हैं। यह चक्र का राज़ समझाया जाता है। भारत पर ही खेल बना हुआ है। भारत ही अविनाशी खण्ड है और सबसे बड़ा तीर्थ है। क्योंकि हैविन बनाने वाला बाप आकर सभी की सदगति करते हैं। इसलिये इनको सबसे ऊंच तीर्थ कहा जाता है। फिर भारत ही हैविन बन जाता है। बाबा ने बहुत बार समझाया है जो मरते हैं तो उनको लिखना चाहिए स्वर्गवासी हुआ तो जरूर नर्कवासी था ना। सभी नर्कवासी हैं। स्वर्ग तो सतयुग को कहा जाता है। अभी तो स्वर्ग है नहीं। आओ तो हम बतावें स्वर्ग में कब चलना होता है। यह सभी बातें बाप ही बैठ समझाते हैं। आत्मा ही सुनती है और आत्मा की मनुष्य तनधारण कर पार्ट बजाती हैं। यह नाटक कितने वर्षों का है उनको भी जानना चाहिए ना। तुम ज्ञान सागर बाप द्वारा अभी जानते हो। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुड मार्निंग और रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।